अमृताक्षर

भाग २

कपिल सहारे

Copyright Disclaimer

This is a work of fiction. Names, characters, places and incidents either are the product of the author's imagination or are use fictitiously. Any resemblance to actual persons, living or dead, events, or locales is entirely coincidental.

Copyright © 2021 by Kapil Sahare

All rights reserved. No part of this book may be reproduced, stored in a retrieval system, or transmitted, in any form or by any means—electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise—without the prior written permission of the writer.

Second Edition : 2021

Book Designed & Published by : US Publication
Address : Chhatarpur, M.P

For Permission contact writer at:
E-mail : sahare.kapil01@gmail.com
Instagram : kapilsahare01

रूपरेखा

'अमताक्खर' दो शब्दों से मिलकर बना हैं, अमत और अक्खर । संस्कृत का अमृत, पाली में अमत और संस्कृत का अक्षर, पाली में अक्खर लिखा जाता हैं । अतः अमृताक्षर या अमताक्खर का शाब्दिक अर्थ हुआ, अजर-अमर रहने वाले अक्षर । 'अमताक्खर' कविता की किताब हैं, जो लेखक के उन भावों और विचारों को दर्शाती हैं, जो उनके अन्दर मौलिक रूप से समाए हुए हैं । इस किताब में 13 कविताए हैं, जो लेखक व्दारा बड़ी ही खूबसूरती से भिन्न-भिन्न भावों को प्रधान बनाकर लिखी गई हैं । हम आशा करते हैं कि आप सभी सम्माननीय पाठक इन मौलिक भावों-विचारो का भरपूर आनंद उठाते हुए लेखक की लेखनी को अथाह प्यार व सराहना करेंगे ।

स्वीकृति

मैं बहुत ही भाग्यशाली हूँ कि मुझे किसी भी विषय वस्तु के प्रति संवेदनशील होकर गहन सोच-विचार व विमर्श कर सटीक निर्णय लेने का गुण अपने माता-पिता से प्राप्त हुआ हैं, जिसके लिए मैं उनका आभार व्यक्त करता हूँ ।

सभी महान समाज सुधारक और खासतौर पर डॉ. भीमराव अंबेडकर, सम्मान्नीय गुरुजन, परिवारजन एवं मित्रो का आभार,जिन्होने पारिवारिक एवं आत्मीय रूप से जुड़कर मुझे अथाह प्यार किया, सम्मान व साथ दिया ।

अंत में बहुत सारा प्यार मेरी प्रिय पत्नी प्रेरणा और प्यारी बेटी पारमी को ।

लेखक का वर्णन

कपिल सहारे, राजीव गांधी प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, भोपाल से संबन्धित यू.आई.टी, आर.जी.पी.व्ही. कॉलेज से सिविल इंजीनियरिंग मे स्नातक हैं । विभिन्न विषयो यथा कला, लेखन, सामाजिक, धार्मिक और राजनैतिक मुद्दो मे उनकी रुचिया हैं । एक लेखक के रूप मे उनका लक्ष पाठको का मनोरंजन करते हुए उनकी चिंताओ व परेशानियों को हल करने की यथासंभव कोशिश करना हैं। वे स्वयं विपश्यना साधना के एक साधक हैं, जो उन्हे निरंतर कुछ नया जानने, सीखने व व्यक्तिगत विकास के लिए प्रयासरत रहने की प्रेरणा देती हैं । वे वर्तमान मे म.प्र. राज्य कृषि विपणन (मण्डी) बोर्ड विभाग मे इंजीनियर के पद पर कार्यरत रहते हुए लेखन कार्य मे भी समान रूप से अपना योगदान दे रहे हैं ।

विषय सूची

क्रमांक	अध्याय	पृष्ठ क्र.
1	किवाड़ की युक्ति	6
2	इश्क़-ए-हक़ीक़ी	8
3	चॉकोलेट–कभी मीठा,कभी जहर	10
4	वो आखरी पल	13
5	बेजुबानों की प्रेम कहानी	14
6	हम शुक्रगुजार हैं तेरे	16
7	सो जा मेरे यार	20
8	साकार होता ख्वाब	23
9	खामोश रात – अनकही बात	25
10	कैसे उसे परिभाषित करूँ ?	28
11	चल, चाय पिए कही	30
12	इन्द्रिय और बाहरी विषय	32
13	व्यथा – पर्दे की कथा	35

किवाड़ की युक्ति

ग्लानि से भरें कब्जे ने,
कहीं अपने मन की बात,
दरवाजे मुझे माफ करना,
जो लगा तुझे आघात,
मुझे पछतावा इस बात का,
कील ने दिखाई अपनी जात का,
उसे कहा था थोड़ा ठहर जा,
तू इतना ना लहर खा,
बात न मानी, की मनमानी,
गया जो दूर छिटककर,
तो साथ छूटा, दरवाजा टूटा,
और गिर पड़ा, बुढ़िया पर,
कराही बेचारी, दर्द की मारी,
पकड़ी खटिया, बड़ी लाचारी,

अंदर छा गया मातम,
बाहर था बड़ा त्यौहार,
टुकड़े कर फ़ेंक दिए,
भभका होली का गुबार,
पछताया कब्जा रो-रोकर,
किया बड़ा पश्चाताप,
कब्जे को फिर ग़ुस्सा आया,
दिया कील को ही श्राप,
दरवाजा खाता, रोज दुल्लती,
इसलिए समझाई, कील को युक्ति,
हुआ था, जीना बड़ा दुश्वार,
कब्जे को बिन बताए, ली मुक्ति ॥

इश्क़-ए-हक़ीक़ी

वो वापिस आ गई.. वो आ गई..
बीमार दिल ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाने लगा,
ताकने लगा यहां-वहां, पगलाने लगा,
तो दिमाग चिल्लाया, ग़ुस्सा दिखाया,
चुप कर, बिल्कुल चुप कर,
दिल रोने लगा, तड़पने लगा,
उसका नाम ले-लेकर सिसकियां भरने लगा,
तो दिमाग भी मायूस होकर बोला,
मत तड़प, मत तरस से रे उस ज़ालिम के लिए,
मेरी परी, परी... दिल फिर भी चिल्लाया,
तो दिमाग को और ग़ुस्सा आया, बोला,
मैं तेरे लिए उसके कदमों तक में जा गिरा था,
रोया था, बिलखा था, गिड़गिड़ाया था,
अरे, दुहाई तक दे डाली थी उस खुदाई की,
टूट के बिखर जाएगा तू, मर जाएगा,

तुझे न ठुकराने की भीख तक मांगी थी,
लेकिन.. वो पत्थर दिल ना पिघली,
बल्कि इतराने लगी, अपने हुस्न का घमंड लिए,
बोली कि तुझे देखकर घिन आती हैं, उल्टी आती हैं,
अरे... छोड़ उस बदसूरत दिल वाली को,
आ तुझे मैं जन्नत की सैर करवाता हूं,
कि आ तुझे मां की गोद में प्यार दिलवाता हूं.
जब तेरा दर्द कुछ कम हों जाए,
और तू सुकून पा जाए ए दिल,
तो रुकना ज़रा, मै खुद ही मेरे सपने में,
तेरे ख्वाबों की परी बनकर आऊंगा,
और तेरे साथ प्यार के पल बिताऊंगा ।।

चॉकोलेट–कभी मीठा,कभी जहर

मेरी लार भी है क्या अजब,
तुझे, देखते ही गिरे, गजब,
कि तेरा, .रखूँगा मैं खयाल,
ओ सजनी, मेरे लिए हैं तू कमाल,

तेरी खुशबू के क्या ही कहने,
मुझे तू, आज दे इसमे बहने,
कि तेरा, साथ हैं लगता लाजवाब,
ओ बंदिया, कहती तू मुझको हैं जनाब,

मैं तो छाल रहित हूँ कुत्ता,
बेसनजी, वफादारी मेरी प्रतिष्ठा,
कि तेरी, जीभ बड़ी ही गुलाबी,
ओ हमदम, बहकाए जैसे शराबी,

हुए थे, हम दोनों एक ही जगह,
बड़ी ही, प्यारी थी मेरी-तेरी माँ,
कि हम, पैदा हुए थे अंधे-बहरे,
ओ बलिए, स्पर्श उतरा था गहरे,

तेरी एक-एक धड़कन मैं सुनू,
साँसे, तेरी मैं उंगली पे गिनु,
कि मेरे, दिल पे हैं छाया तेरा नूर,
ओ पोमेरेनियन, तू हैं मेरी कोहनूर,

तूने हिलाई जो अपनी पुंछ दाए,
मेरा, दिल बोला खुशी से हाय,
कि मैं, दिन-रात सपने मे रहूँ,
ओ प्रिये, संग-संग तेरे मैं जीयु,

अरे मैं, तेरे लिए गाता रहा,
पर तेरा, चक्कर कही और चल गया,
कि मेरे, प्यार मे थी सच्चाई,
ओ बेवफा, क्या तुझे नज़र नहीं आई,

अब मेरा जीना हुआ है दुश्वार,
कुछ भी, अच्छा लगे न, कई बार
कि मैंने, सोचा कि जो न था मेरा,
ओ खुदगर्ज़, सुन ले कि पत्थर दिल तेरा,

न सोचा, ऐसा भी एक दिन आएगा,
तेरा-मेरा, साथ भी छुट जाएगा,
कि अब मैं, चलता हूँ मेरे दोस्तो,
खुश रहो, चॉकोलेट मुझे अब दे दो ॥

वो आखरी पल

ये तो काल-चक्र
चलता बेफिक्र,
नहीं रुकता कभी,
चाहे सोम या शुक्र,
थी एक दीवार घड़ी,
कई सावन वो चलती रही,
एक दिन बैटरि घनघनाई,
अंतिम समय आया भाई,
सुनकर, जाने का शोर,
मचा हाहाकार चारो ओर,
सेकण्ड्स से उम्मीदे लगाई,
पूरी करेगा, रेस भाई,
एक चक्कर था पूरा बचा,
घण्टे-मिनट के मिलन का मज़ा,
हुई बारह पर बैटरि विदाई,
समय फिर भी चलता रहा भाई ॥

बेजुबानों की प्रेम कहानी

तेरा स्पर्श, मुझे हो जाता हैं,
मेरा रोम-रोम खिल जाता हैं,
मेरे इश्क मे, तू दीवानी हैं,
चाहे बेघर या खानदानी हैं,

तेरा रात-दिन मुझसे वो खेलना,
जान से ज्यादा मुझे चाहना,
मुझको बड़ा ही भाता हैं,
आनंद मुझे बड़ा ही आता हैं,

तू पानी से, हैं मुझे बचाती,
गार्ड तू मुझे, हर बार लगाती,
साथ कभी न तेरा छोड़ुंगा,
लेकिन फूटा, तो खर्चा ले लूँगा,

मैं टच हूँ तेरा, फिंगर तू मेरी,
जब तक मोबाइल, मैं जरूरत तेरी,
देख नया कौन सा एप्प आया हैं,
डाउनलोड कर जल्दी, न कर देरी ॥

हम शुक्रगुजार हैं तेरे

ए हमारी खुबसूरत आंखे,
तुम न होती, तो किस तरह देख पाते हम,
इतनी खुबसूरत दुनिया को, रंगो को, माता-पिता को,

ए हमारे प्यारे कान,
तुम न होते, तो किस तरह सुन पाते हम,
चहकते कलरव को, स्वरो को, मम्मी-पापा की गूंज को,

ए हमारी दुलारी नाक,
तू न होती, तो किस तरह सूंघ पाते हम,
मिट्टी की सुगंध को, फूलो की महक को, गंध को,

ए हमारे निराले होंठ,
तू न होता, तो किस तरह दे पाते हम,
मनमोहक मुस्कान को, प्यार भरे चुंबन को,

ए हमारी सुरीली आवाज़,
तू न होती, तो किस तरह बयां कर पाते हम,
अपने शब्दो को, भावो को, रागो को,

ए हमारे गुलगुले मुह,
तू न होता, तो किस तरह खा पाते हम,
स्वादिष्ट पकवानो को, कंदमूल और जामो को,

ए हमारे दैवीय चेहरे,
तू न होता, तो किस तरह दे पाते हम,
सुकून हीर-रांझो को, भिन्नता मनुष्यों को,

ए हमारे कर्मठ हाथ,
तुम न होते, तो किस तरह कर पाते हम,
पुरुषार्थ शरीर का, स्पर्श खूबसूरत चूड़ियों का,

ए हमारे मजबूत पाव,
तुम न होते, तो किस तरह चल पाते हम,
बगैर पायल के, आदर-सत्कार के,

ए हमारे बाहरी शरीर,
तुम न होते, तो किस तरह जी पाते हम,
वातावरण की मार में, मनुष्यों के संसार में,

ए हमारे दिमाग,
तू न होता, तो किस तरह कर पाते हम,
शरीर से सारे काम-काज, पढ़ना-लिखना, विचार आज,

ए हमारे चंचल मन,
तू न होता, तो किस तरह दर्शाते हम,
अपने हाव-भाव को, प्यार और कारस्तानियों को,

ए हमारी आंतरिक प्रकृति,
तू न होती, तो किस तरह के होते हम,
क्या जड़, पत्थर ? मेरी आंतरिक चाँदनी के लिए,
हम शुक्रगुजार हैं तेरे,

कभी ध्यान ही नहीं दे पाए थे अपने आप पर,
हर-पल बाहरी दुनिया मे ही खोए रहते हैं,
इसलिए आज हम किसी की परवाह किए बगैर,
शुक्रिया अदा करते हैं, स्वयं अपने आप को ॥

सो जा मेरे यार

अरे, मैं पुछती हूँ तुझसे,
क्यों तुझे समझ नही आता हैं ?
तू समझ क्या रहा मुझे,
क्यों मेरे पास तू आता हैं ?
तू प्यार बड़ा जताता मुझसे,
फिर ग़ुस्सा भी हो जाता हैं,
क्यों फेके मुझे तू यहाँ-वहाँ ?
फिर पास भी ले आता हैं,
दुःखे जो तेरी पीठ तो तू,
मुझे ही पीछे टीकाता हैं,
गर झगड़ा हो जाए तो फिर,
मुझे हथियार बनाता हैं,
सुन, प्यार तुझे जो हो जाए,
तो मेरा माथा खाता हैं,

जो टूटे दिल तेरा तो फिर,
तू टेसुए बहाता हैं,
अरे, मैं सोचती, मैं सोचती,
आखिर तेरी मैं कौन ?
कहना तो चाहु मैं भी कुछ,
लेकिन रहती हूँ मौन,
सुन, रूप मेरे हैं कई हज़ार,
तू रंगो की बात मत कर यार,
कोई घर मे सिलता हैं मुझको,
कोई बेचे सारे भरे बाज़ार,
मेरी जाति नहीं, कोई धर्म नहीं,
बस तेरी सेवा, कोई कर्म नहीं,
कभी मखमली, कभी सख्त,
जो चाहे बना, मुझे शर्म नहीं,
आजा मेरे पास मेरे प्यारे,
करू मैं तेरा लाड़-दुलार,
धो लिया कर कभी-कभी,
जब गिरती मुझपे तेरी लार,

और मैं नहीं हूँ, तेरी साजना,
दिलरुबा या तेरी बालमा,
तू दूरी मुझसे बनाया कर,
ना रगड़ तू मुझसे खाया कर,
अरे, मुझे तकिया ही समझो भैया,
सुहागरात मे सजाता सैया,
उफ़्फ़ ये कैसा शोर दैया-दैया,
सब ठीक था न, सुबह पुछे मैया,
सुन, तू मुझे फालतू न मान,
घड़ी मे बज गए हैं अब चार,
जो रखना हो गर्दन का खयाल,
तो मुझे नीचे ले के, सो जा मेरे यार ॥

साकार होता ख्वाब

सुना हैं, बड़ा ख़ूबसूरत हैं तेरा गांव,
पहाड़ियों से घिरा और पेड़ों की छांव,
बहती एक नदी हैं, कलकल सी,
कुछ दूर जाकर गिरती वो, झर-झर सी,
सुना हैं, एक महल भी हैं वहा सपनों का,
साथ आज भी जहा हैं, अपनों का,
मुझे आया था कभी एक ख़्वाब,
जहां हुआ था मेरा सत्कार, राजकुमारो सा,
घोड़ी पर चढ़कर आया था मैं,
सेहरा बांधे ख़ूबसूरत बहारों का,
जब चली थी जोड़ी हम दोनों की,
देखता रहा था पूरा गांव सुनारो का,
सोच रहे थे मतवाले, कैसे रोके ?
अब मिलन कैसे हो, दो किनारों का ?

फिर सूरज निकला और हुई सुबह,
तैयारी शुरू की, पहुंचे उस जगह,
जहाँ तुझे देखने हमें आना था,
और निर्णय अपना बताना था,
वो निर्णय जो पहले ही हो चूका था,
केवल औपचारिकता बस निभाना था,
रसोई से निकलते ही तेरी वो मुस्कान,
पानी-चाय बहाना, तुझे देखने की थी तहान,
बाते करना तो एक बहाना था,
कुछ पल का साथ, जो तेरा पाना था,
वो बेसब्री, कब वरमाला डलेगी,
मेरे साथ तू अपने घर को चलेगी,
खुशियों से भर गया था मेरा जहान,
जब हमें एक कर गया था, वो पल महान ।।

खामोश रात – अनकही बात

तू सच मे खामोश हैं,
या दिखावा कर रही हैं ?
मेरे साथ रही हर पल,
अब मुझ पर हंस रही हैं,
मेरी हँसी को देखा हैं तूने,
मेरी सिसकियों मे साथ रही,
जब भी अकेला पाया खुद को,
तूने मुझसे ये बात कही,
कि नन्हा सा हैं रे तू,
और नन्ही सी हैं तेरी जान,
क्यों खतरो का खिलाड़ी बने,
क्यों जितना चाहे जहान ?
मेरी खामोशी मे ढूंढ तो सही,
तुझे सारे जवाब मिलेंगे,
क्यों परेशान होता हैं बावरे,
सारे गुलिस्ता यही खिलेंगे,

लेकिन तूझसे हुई थी ये खता,
कि तूने मुझे कुछ भी न माना,
लुटाकर अपना सुख चैन,
बस, तूने इतना ही जाना,
कि नीरा मूर्ख था तू,
जो झूलने चला था फंदे पर,
एक रात जब तू तड़पा था,
क्या ले पाते तूझे कंधे पर,
जिनकी गोद मे खेला था तू,
बैठा था जिनके कंधो पर,
नन्ही उंगली थाम कर तेरी,
चले थे जो काम-धंधो पर,
ए रात मैं तुझसे कह रहा हूँ,
तेरा अक्स दिखा, यू बातें न बना,
अरे, सुबह तू क्यों चली आई हैं,
चल हटा दे, ये कोहरा घना,
ये सुबह का कलरव कैसा हैं ?
तू मौन रह, सुन ऐसा हैं,

वो खुशी लुटाती हैं मुझ पर,
जो रहती पर्दा डाले, खुद पर,
सब कहते उसे हैं मौन रातें,
सबकी अपनी-अपनी हैं बातें,
किसे पड़ी हैं औरों की,
ये तो दुनिया ही हैं गैरो की,
अब मेरा तो अपना आप हैं,
बस कुछ साँसो की ही नाप हैं,
तू ठहर अभी लीन होने दे,
अपने में खो, तेरा होने दे ॥

कैसे उसे परिभाषित करूँ ?

क्या लिखूं उसके बारे में,
जिसका कोई अता-पता नहीं,
न मैंने कभी देखा उसे,
किसी और ने कभी जाना नहीं,

बातें हैं, मान सको तो मान लो,
डर का भ्रम हैं फैला, ये जान लो,
कि भटकेगी वो अँधेरी रात में,
सफ़ेद साड़ी और दिया लिए हाथ में,

सदा चली हैं दुनिया, दिन और रात,
न पाया किसीने, कल या आज,
फिर कैसे उसे परिभाषित करूँ,
मेरे शब्दों में कैसे कैद करूँ,

इसी सोच में, उलझा रहता हूँ,
आव्हान सदा ही करता हूँ,
क्या रहती तू मेरी काया में,
तेरे रहमो करम पर जीता हूँ ?

तू आ भी जा, तेरा अक्स दिखा,
गर मुझमे तू, तो नज़र मिला,
अस्तित्व तेरा कैसे खोजू,
क्या ध्यान करूँ या मरू, बता ।।

चल, चाय पिए कही

अरे, ऐसी क्या बात हैं तुझमे,
जो मैं तुझे अपना दोस्त बनना चाहूँगा ?
क्या तुझमे साथ होने का एहसास हैं ?
शिकवे-शिकायत की गुंजाईश हैं ?
रूठने-मनाने की ख़्वाहिश हैं ?
ये बता, रिश्ते का उत्साह मनाएगा,
या भाव खाएगा ?
खुशनुमा पलो मे साथ रहेगा,
क्या दुख मे भाग जाएगा ?
ये ज़िंदगी हैं, इसमे मैं उलझुंगा,
कभी व्यस्त रहूँगा,
क्या तेरे दूर होने पर भी,
पास होने के एहसास से मस्त रहूँगा ?
सुन, वैसे तो मैं शरीफ हूँ,
लेकिन क्या तू मेरी चुगली करेगा ?

पेट्रोल-पानी तक तो ठीक हैं भाई,
ये बता, खाने का बिल कौन भरेगा ?
साले, बोलू तो चलेगा ना,
गाली दु, तब भी मिलेगा ना ?
देख, बहन तेरी, तो वो मेरी भी बहन होगी,
माँ-बाप तेरे हैं या मेरे,
इतना ख्याल कौन रखेगा बे ?
एकसाथ रहेंगे, करेंगे मज़ा,
घूमेंगे-फिरेंगे, तोड़ेंगे शीशा,
देख झूठ तेरा या मेरा हो,
लेकिन होगा मखमली,
चाहे रहे बिस्तर पर, और कहे,
देख हाथ हिला रहा हूँ, दिखा कि नहीं ?
और लड़की-लड़के का चक्कर ? छोड़ बे,
दोस्ती मे इतना क्या सोचना,
चल, चाय पिए कही ॥

इन्द्रिय और बाहरी विषय

तू जब रेटिना पर आकर,
प्रतिबिंब दिखलाता हैं,
तब कही जाकर अपना प्यार,
परवान चढ़ पाता हैं ॥

तू ध्वनितरंगों मे आकर,
गुदगुदाहट कर जाता हैं,
संदेश तेरा पढे दिमाग,
तो मौसम सुहाना हो जाता हैं ॥

भावनाओ को तेरी पाकर,
दिमाग कही खो जाता हैं,
स्वभाव परिवर्तित हो जाता,
जब तू मुझसे मिल जाता हैं ॥

अग्र बोले, मीठा, नमकीन,
पश्च, कड़वा बतलाता हैं,
किनारा चटखारा लेकर,
अपनापन दे जाता हैं ॥

रंग से मुझे फर्क नहीं पड़ता,
ताप, वेदना बतलाती हूँ,
प्यार लुटाये भले कोई मौसम,
साथ सभी का निभाती हूँ ॥

मैं जागु, तो मौसम खिल जाए,
भूत क्या, भविष्य पता चल जाए,
फिर उससे न छिपा रहे कोई रहस्य,
जो अंतर्ध्यान में मुझे जाग्रत कर पाए ॥

ये रहस्य बड़ा ही गहरा हैं,
मन एक जगह कभी नहीं ठहरा हैं,
जो टिक जाए तो पता चले,
क्यों इस पर इतना पहरा हैं ॥

ये दुनिया बड़ी हसीन हैं,
रहस्यों से भरी रंगीन हैं,
विपश्यना ही हैं आधार,
बाकि सब मिथ्या संसार ॥

व्यथा – पर्दे की कथा

तू सिर्फ एक लहराता कपडा नहीं रे,
किसी की इज्जत-आबरू तक बचाता हैं,
धुल, धुप, पानी, सर्द हवाओ को तू,
निःस्वार्थ सा, अपने में समाता हैं,

अरे, कई बेघरो की तू युक्ति हैं,
तू दिलाता परेशानियों से मुक्ति हैं,
तेरा नहीं कोई इस जग में सानी रे,
पर्दे, यही तो तेरी महान सूक्ति हैं,

भिन्न-भिन्न रंगों को लेकर तू,
घरों को खूबसूरत बनाता हैं,
सकारात्मक उर्जा से भरते सभी,
जब खिड़की-दरवाजों पर लगाया जाता हैं,

किसीका तुझसे सम्बन्ध होता मन से,
खुबसूरत रंगों से सजाया जाता हैं,
कोई हाथ तो क्या, नाक भी पोंछे,
तो कोई अपने जूतों को चमकाता हैं,

तेरा काम हैं क्या, तेरी शान ही क्या,
फिर भी तुझे बेगैरत समझा जाता हैं,
कोई यहाँ से वहाँ तुझे ऐसे फेके,
जैसे भिखारी को दुत्कारा जाता हैं,

सालभर गन्दा होता, मैला रहता,
फिर त्योहारों में धोया जाता हैं,
नया रहता तो शान बढाता,
या फिर दूसरा लगाया जाता हैं,

फिर किसी कोने में ठुंसा जाता,,
या गठरी में बांधा जाता हैं,
गर चूहे तुझे कुतर जाए तो,
कौड़ियों के दाम बेचा जाता हैं,

टेलर भी करता काम अजब,
तुझे काट-छाँट कर सीता जाता हैं,
पुराने को देकर एक नया ही रूप,
फिर बाजारों में बेचा जाता हैं ॥

श्रेय

MOHAMMAD SAMEER

COMPILER

mohammad_sameer_23

MOHAMMAD SHOAIB

DESIGNER

mohammadshoaib_29

धन्यवाद